32

क्रूस की ठोकर

मत्ती 16:16-23; 26:31-35;
मरकुस 8:27-33; 14:27-31

''परन्तु हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं जो यहूदियों के निकट ठोकर का कारण, और अन्यजातियों के निकट मूर्खता है। परन्तु जो बुलाए हुए हैं क्या यहूदी, क्या यूनानी, उन के निकट मसीह परमेश्वर की सामर्थ, और परमेश्वर का ज्ञान है'' (1 कुरिन्थियों 1:23, 24)।

महान प्रेरित पौलुस ने कहा, *''पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का''* (गलातियों 6:14; KJV)। क्रूस की महिमा क्रूस की पीड़ा से ही आती है। परमेश्वर के पुत्र ने अपनी मृत्यु को महिमापूर्ण विजय में बदल दिया।

क्रूस पर लोगों के लिए परमेश्वर का बड़ा जिगर दिखाया गया था। यह सब उसने अपने पुत्र की मृत्यु के द्वारा किया। इससे बढ़कर वह और क्या कह सकता था? शैतान ने क्रूस की महिमा से हमें अन्धे करने के लिए अपना पूरा ज़ोर लगा दिया है। उसने चाहा कि यह हमें घिनौना और बेतुका लगे, जिससे हम इसे ठुकरा दें। इसलिए ''क्रूस की ठोकर'' को पहचानना बड़ी ही संवेदनशील बात है। परमेश्वर ने हमारा उद्धार क्रूस के द्वारा करना चुना है, परन्तु शैतान हमें इसका मज़ाक उड़ाने के लिए उकसाता है। यदि हम ''क्रूस की ठोकर'' को नहीं समझते हैं तो हमें शायद यह भी समझ नहीं आएगा कि इस जगत का ईश्वर अर्थात शैतान क्या कर रहा है! उसकी योजनाओं को न समझ पाने का अर्थ अपने आप को धोखा देना है!

प्रवचन, गीत, पुस्तकें, कला और हमारी दिन भर की बातचीत सब क्रूस से कांप जाते हैं, तो फिर हम कैसे कह सकते हैं कि इसमें कोई ठोकर है? कई लोग ''सुन्दर बालक यीशु'' या ''क्रूस पर मर रहे लाचार व्यक्ति'' की बात करते हैं और यीशु को ''अहानिकर व्यक्ति'' के रूप पेश करते हैं। इस सबसे क्रूस की कहानी को परिकथा में बदल दिया जाता है। प्रचलित प्रचार से क्रूस का खून-खराबा, हिंसा और वहशीपन निकाल दिया गया है, जिसने क्रूस को कष्ट रहित बनाकर इसे बेफल कर दिया है।

आज के लोगों में से मुझे नहीं लगता कि किसी ने किसी को क्रूस दिए जाते हुए देखा होगा। ऐसी मृत्यु इतनी अपमान भरी होती थी कि इसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। इस स्थिति में हमारे लिए लगभग असम्भव ही है कि हम इसके कष्ट समझ पाएं। हम क्रूस को अपनी चर्च बिल्डिंग (गिरजाघर) में लगाते हैं यानी हमारे मन में यह सुन्दर लगने वाली और सजावट की वस्तु

है। परन्तु क्रूस केवल ''सही नमूना'' ही है और न केवल ''सार्थक कहानी'' है। लोग यीशु की मृत्यु के अर्थ को न समझ कर क्रूस को महिमा देते हैं। क्रूस कोई भावुक कहानी बताना नहीं है, यह तो मनुष्य के पापों के लिए परमेश्वर के पुत्र की ऐतिहासिक मृत्यु है।

हम जीवन से प्रेम करते हैं, जबकि क्रूस मृत्यु की प्रस्तुति है। हम विजय बुनते हैं, जबकि क्रूस का आरम्भ पराजय से होता है। हम शान्ति ढूंढ़ते हैं, जबकि क्रूस युद्ध का कारण है। हमें सुन्दरता अच्छी लगती है, जबकि क्रूस कुरूप है। क्रूस उससे बिल्कुल अलग है जो मनुष्य चाहता है। आलोचक विरोध करते हैं कि ''परमेश्वर ने परमेश्वर होने का साहस कैसे किया!'' परन्तु वह तो परमेश्वर ही है, परमेश्वर था और परमेश्वर ही रहेगा। एक ही धर्मी परमेश्वर होने के कारण उसने क्रूस पर कष्टदायक मृत्यु के द्वारा अपने पुत्र से हमारे पाप उठवाना चुना।

यीशु ने दृढ़ता से अपने चेलों को बताया कि वह ठोकर लाएगा (मत्ती 16:16-23; 26:31-35; मरकुस 8:27-33)। मसीह ने यह कहते हुए कि उसके चेले उसमें ठोकर खाएंगे, यूनानी शब्द का इस्तेमाल किया, जिसके अंग्रेज़ी शब्द ''scandalized''[1] का अर्थ धकेले जाना है (मरकुस 14:27-31; यूहन्ना 6:60, 61)।

लोगों को यीशु से और क्रूस पर उसकी मृत्यु से ठोकर लगी। उन्हें समझ नहीं आया कि क्रूस पर दिया जाने वाला व्यक्ति उद्धारकर्त्ता कैसे हो सकता है। सभ्य रोमी समाज में ''क्रूस'' शब्द घिनौना माना जाता था और इसकी बात भी लोगों के बीच में नहीं होती थी। पतरस की नज़र में यीशु को क्रूस दिए जाने का विचार बहुत बड़ी बात थी, जिस कारण उसने उसे बचाने की कोशिश की। उसका विरोध हुआ। हम परमेश्वर के मामले को अपने तरीके से निपटाने नहीं देना चाहते। पतरस पुराने नियम के धर्मशास्त्र को जानता था, जिसमें वृक्ष (क्रूस) को शापित दिखाया गया था (व्यवस्थाविवरण 21:23; प्रेरितों 5:30; गलातियों 3:13); जिस कारण वह नहीं चाहता था कि यीशु को ऐसी मौत मरना पड़े।

यीशु ने तुरन्त और दृढ़ता से पतरस को डांट कर उसे शैतान से मिला दिया (मत्ती 16:23)। लोग शत्रु को डांट सकते हैं, परन्तु उन्हें समझ नहीं होती कि अपने साथी को कैसे डांटना है। यीशु ने उसे डांटा और उसे उसके रास्ते में न आने के लिए कहा, क्योंकि यीशु क्रूस की ओर जा रहा था।

क्रूस यीशु के लिए युद्ध का मैदान था। गतसमनी में ''लहू की बूंदों की तरह उसका पसीना'' निकला, जिस कारण उसने परमेश्वर से प्रार्थना की कि हो सके तो कोई और तरीका ढूंढ़ो (लूका 22:40-44)। क्रूस को छोड़ कोई और रास्ता था ही नहीं।

पौलुस सुसमाचार से लजाता नहीं था (रोमियों 1:16, 17)। क्या हम लजाते हैं? परीक्षा सदा से क्रूस को बदलने अर्थात इसे कम करने की ही रही है। पौलुस ने गलातियों 5:11 (NKJV) में ''क्रूस की ठोकर'' की ही बात नहीं की, उसने मसीह को ''ठोकर लगने की चट्टान'' के रूप में दिखाया भी है (रोमियों 9:31-33)। उसने बताया कि क्रूस यहूदियों के लिए ठोकर और अन्यजातियों के लिए मूर्खता है (1 कुरिन्थियों 1:17-25)।

यीशु द्वारा लाए गए उद्धार की समझ हमें तब तक नहीं आएगी जब तक हमें क्रूस की समझ नहीं आती। क्रूस पर यीशु ने कहा कि पाप को पराजित करने का एकमात्र ढंग सच्चाई से पाप का न्याय करना है। यदि क्रूस से कोई फर्क नहीं पड़ता तो किसी भी बात से फर्क नहीं पड़ता!

सम्भवतया इस पृथ्वी पर क्रूस जितना विवादास्पद, ठोकर दिलाने वाला और फूट डालने

वाला है, उतनी और कोई चीज़ नहीं। लोगों को जितना क्रोध यीशु ने दिलाया और दिलाता है, और किसी ने नहीं दिलाया!

क्रूस ठोकर दिलाता है, क्योंकि सही परमेश्वर है न कि मनुष्य। (1) परमेश्वर सही है क्योंकि हमारी समस्या *पाप* है। (2) परमेश्वर सही है क्योंकि *पाप* का एकमात्र क्रूस है! पापी लोग खोए हुए, बिना उम्मीद के और नरक की ओर जा रहे हैं, यही बात हमें ठोकर दिलाती है। हम में से बहुत से लोग यह मानने को तैयार नहीं हैं कि हम इतना खोए हुए हैं कि हमें उद्धार की आवश्यकता है। पापी न तो अपना दोष जानना चाहते हैं और न उसे याद करना चाहते हैं। यह कहना कि हम पापी हैं हमारे गौरव, हमारे स्वार्थ, हमारे ढीठपन और हमारे पापी मनों के विरुद्ध है। मसीह अधर्मियों के लिए अर्थात पापियों के लिए मरा (रोमियों 5:6-8)। हम सब पापी कहलाने के योग्य हैं!

क्रूस ठोकर दिलाता है, क्योंकि पापी लोग न तो उद्धार के हकदार हैं, न इसे कमा सकते हैं और न इसे खरीद सकते हैं। यहां हम अनुग्रह की ठोकर देखते हैं! मनुष्य अपना उद्धार नहीं कर सकता। पर न्याय की जो मांग थी उसे अनुग्रह ने पूरा कर दिया। यीशु ने पूरा दाम चुका दिया। पापी मनुष्य बिना यीशु के असहाय ही है! मनुष्य क्रूस की न तो कल्पना कर सकता है और न इसकी व्याख्या कर सकता है। वह दीन होकर इसमें विश्वास कर सकता है। यही बात हमें ठोकर दिलाती है।

क्रूस ठोकर दिलाता है क्योंकि हम परमेश्वर की बात को ''अपने ढंग से'' नहीं मान सकते। यीशु ने कहा, ''मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता'' (यूहन्ना 14:6)। उसका यह कथन कठोर, रूखा, निराला, असहनशील और न्याय करने वाला है ... परन्तु यही सच है। ऐसी घोषणा ठोकर दिलाने वाली है (देखें प्रेरितों 4:11, 12)। हम मनुष्य को प्रसन्न करना चाहते हैं या परमेश्वर को? (यूहन्ना 12:42, 43; प्रेरितों 5:29)। यीशु से अलग होकर किसी पापी का उद्धार नहीं हो सकता। हमारे लिए समय आ गया है कि क्रूस को वह स्थान दें जो परमेश्वर ने इसे दिया है। परमेश्वर ने स्वयं ... हमें अपने आप से ... बचाने के लिए ... अपने आप को दे दिया!

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!

टिप्पणी

[1] ''scandalized'' के लिए यूनानी शब्द *skandalizo* का अर्थ ''गिर जाना'' है।